International Research Journal of Humanities, Language and Literature ISSN: (2394-1642)
Impact Factor 5.401 Volume 4, Issue 8, August 2017
Website-www.aarf.asia, Email : editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

''वर्तमान शैक्षणिक अनुसंधानों की प्रभावशीलता''

डॉ0 दीपशिखा मित्तल
एसो0 प्रो0 / विभागाध्यक्ष (मनोविज्ञान)
बुन्देलखण्ड महाविद्यालय झाँसी

किसी भी क्रिया, प्रक्रिया तथा प्रतिक्रिया की प्रभावशीलता प्रश्नों के उत्तरों पर निर्भर करती है कि वह समाज, राष्ट्र एवं विश्व के लिए भूतकाल में क्या दिशा प्रदान करती रही है? वर्तमान में कितनी प्रासंगिक एवं उपयोगी है। विकास एवं परिवर्तन के साथ भविष्य के लिये क्या आधार प्रदान करती है?

शैक्षिक अनुसन्धान एक ऐसी क्रिया है, जो वैज्ञानिक विधि और दार्शनिक चिन्तन का प्रयोग करते हुए शैक्षिक व्यवहार गत विज्ञान के विकास में योगदान देती है। कोई भी व्यवस्थित अध्ययन जो शिक्षा को विज्ञान के रूप में विकसित करने के लिये किया जाता है, उसे शैक्षिक अनुसन्धान करते है, इसलिये इन्हें सामाजिक, वैज्ञानिक, व्यवहार गत अनुसन्धान भी कहा जाता है। जिसके क्रियाकलाप उन सब घटनाओं से सम्बन्धित है जो शिक्षण अधिगम की शैक्षिक प्रक्रिया के अन्तर्गत आते है।

शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया पूर्णतः समाज की आवश्यकता एवं वातावरण पर निर्भर करती है। आज समाज में इतनी विसंगतियाँ पैदा हो गयी है, जिनके प्रभाव से सम्पूर्ण शिक्षा जगत भी अछूता नहीं रहा है। राजस्थान पत्रिका के प्रधान सम्पादक माननीय गुलाब कोठारी ने भी इस और अपनी चिन्ता प्रकट करते हुये कहा है कि 'वर्तमान समाज में व्याप्त साहित्य और शिक्षा का स्तर यह है कि वह मानव सृजन में ही सक्षम नही है। कोई भी बीज तब तक पेड़ नही बन सकता जब तक कि उसे जमीन में बो नही दिया जाए। यह संकल्प लेना होगा, कि बीज बनकर समाज के लिये जीए। यह तैयारी करनी होगी कि हमें अपने लिए नहीं समाज के लिए जीना है। आज हमें यह नही पता कि घर में क्या हो रहा है? बच्चे अभिभावकों की बात नही मानतें। माता–पिता भी स्वतन्त्र रहना चाहते है। जब भाई–बहिन की ही चिन्ता नहीं करेगा तो वह समाज की चिन्ता कैसे करेगा?

ऐसी विषम सामाजिक परिस्थितियों में किये जा रहे विभिन्न शैक्षिक अनुसन्धानों की प्रभावशीलता पर प्रश्न उठना स्वाभाविक है।

© Associated Asia Research Foundation (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

समस्याएं–

1. शैक्षिक अनुसन्धान बुद्धि जीवियों से सम्बन्धित होते है और मानव व्यवहार बहुत ही जटिल होता है मानव की चित्तवृत्ति प्रतिक्षण बदलती रहती है। उसके परिवेश में आने वाला कोई भी तत्व उसे प्रभावित कर सकता है, अतः अनुसन्धान से प्राप्त निष्कर्षो में बहुत ही तीव्रता से परिवर्तन हो जाने की सम्भावना बनी रहती है।
2. यह एक विकासशील अध्ययन क्षेत्र है, इसलिए इसको निर्विवाद रूप से पारिभाषित करना दुष्कर है।
3. शैक्षिक अनुसन्धान की समस्याएं शिक्षा, समाजशास्त्र, मनोविज्ञान एवं मनोविज्ञान की विभिन्न शाखाएं (जैसे बाल मनोविज्ञान, किशार मनोविज्ञान, प्रौढ़ मनोविज्ञान, समाज मनोविज्ञान, नैदानिक मनोविज्ञान, पर्यावरणीय मनोविज्ञान, सामान्य मनोविज्ञान, असामान्य मनोविज्ञान आदि) मानवशास्त्र, राजनीतिशास्त्र, अर्थशास्त्र, इतिहास, प्रशासन एवं संस्कृति आदि विभिन्न विषयों से सम्बन्धित होती है। इन पर किये गये अनुसन्धान से प्राप्त निष्कर्षों की व्यक्तिगत व्याख्या अपेक्षित रहती है।
4. यह एक जटिल प्रक्रिया है, जो मूल रूप से एक ओर विज्ञान तथा दूसरी ओर विज्ञान के दर्शन से जुड़ी है।
5. शैक्षिक अनुसन्धान कर्ता को वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ कल्पनाशील और अन्तर्दृष्टि वाला भी होना अपेक्षित है।
6. यह एक सामाजिक, वैज्ञानिक, व्यवहारगत अनुसन्धान है जिसके क्रियाकलाप, शिक्षण–अधिगम प्रक्रियाओं की घटनाओं से सम्बन्धित है।
7. इस अनुसन्धान को प्रयोगात्मक विधि से करने हेतु यदि शारीरिक एवं मानसिक अवस्था के आधार पर प्रायोगिक एवं नियन्त्रित समान समूहों का निर्माण किया जाता है तब भी ऐसे बहुत से अन्य तत्व होते है जिनसे दोनों ही समूह प्रभावित रहते है अतः एक समूह के आधार पर की गयी भविष्यवाणी दूसरे के लिये अधिकतर सत्य नहीं होती।
8. चरों पर उतरा कठोर नियन्त्रण नहीं किया जा सकता जितना भौतिक तथा जैविक विज्ञानो में सम्भव है।

उपयोगिता –

वर्तमान तकनीकी युग मे शिक्षा के क्षेत्र में तीव्र गति से हो रहे परिवर्तन के कारण शैक्षिक अनुसन्धान की अत्यन्त आवश्यकता है। आज से लगभग 35 वर्ष पूर्व शिक्षक प्रशिक्षण की शैली एवं आज की शैली में बहुत परिवर्तन आ गया है।

1. आज संगणक का ज्ञान सभी शिक्षकों के लिये अनिवार्य आवश्यकता है।
2. पर्यावरण शिक्षा, यौन शिक्षा, जीवन कौशल शिक्षा , शान्ति शिक्षा, संगणक शिक्षा आदि विषय पाठ्यक्रम के अभिन्न अंग है।
3. समाज के बदलते परिवेश के साथ समायोजन हेतु शैक्षिक अनुसन्धान की आवश्यकता है।

4. शिक्षा के उद्देश्यों का निर्धारण, पाठ्यक्रम में परिवर्तन, शिक्षण विधियों का चयन , कक्षा में प्रतिदिन उत्पन्न होने वाली समस्याओं का निवारण, गुरू और शिष्य के मधुर सम्बन्धों का स्थापन, विद्यालय का शिक्षाप्रद वातावरण आदि बनाये रखने हेतु भी निरन्तर अनुसन्धान किया जाना अपेक्षित है।
5. शिक्षक में वैज्ञानिक दृष्टिकोण उत्पन्न करके आत्म विश्वास की वृद्धि करना अपेक्षित है।
6. नित किये गये प्रयोगों एवं नवाचारों द्वारा शिक्षण को रूचिकर सरल एवं सरस बनाने हेतु शैक्षिक अनुसन्धान आज बहुत ही महत्व रखते है।

शैक्षिक अनुसन्धान की वर्तमान स्थिति–

1. सरकारी, अर्द्धसरकारी एवं गैरसरकारी सभी–संस्थाओं द्वारा आर्थिक सहायता का अभाव।
2. शैक्षिक नीतिनिर्धारकों , शैक्षिक प्रशासकों एवं शिक्षकों के बीच सार्थक संवााद तथा सहयोग का अभाव।
3. विद्यालयों, महाविद्यालयों तथा विश्वविद्यालयों में अनुसन्धान उन्मुख वातावरण का अभाव।
4. प्रामाणिक उपकरणों का अभाव।
5. किसी समूह एवं जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करने वाले न्यादर्श की समस्या।
6. केवल डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त करने के उद्देश्य से शैक्षिक अनुसन्धान का प्रचलन।
7. शिक्षकों में अनुसन्धान के प्रति रूचि का अभाव।
8. अधिकांश शिक्षकों को सार्थक शैक्षिक अनुसन्धान के लिये न पर्याप्त प्राशिक्षण प्राप्त है और न ही शिक्षा के क्षेत्र का पर्याप्त ज्ञान। इसलिये इस तरह के अनुसन्धान से प्रायः कोई रचनात्मक निष्कर्ष नहीं निकल पाता अथवा उसके आधार पर दिये गये हल और सुझाव अव्यवहारिक होते है।

विश्वविद्यालयों तथा शिक्षा विभागों का मूल रूप से विद्यालयों से सम्बन्ध नहीं होता और अनुसन्धानकर्ता अधिकांश शिक्षा के 'क्षेत्र में कार्यकर्ता' नहीं होते।

तथापि शैक्षिक अनुसन्धान को प्रोत्साहित करने तथा उनके लिये आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध कराने के प्रयत्न राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद् नई दिल्ली, राज्य शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद्, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली द्वारा निरन्तर प्रयास किये जा रहे है। शिक्षा में एम0एड0, एम0 फिल एवं पी–एच0डी0 करने वाले छात्रों द्वारा तथा विभिन्न विश्वविद्यालयों द्वारा किये जा रहे प्रयास एवं विभिन्न व्यवसायिक पाठ्यक्रमों जैसे– मेडिकल, इंजीनियरिंग, प्रबन्धन, विधि (कानून) के क्षेत्र में नित नये शैक्षिक अनुसन्धान करके विशेष योगदान दिया जा रहा है इसी का परिणाम है , कि इन्डियन इन्स्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, कोलकाता में एक ऐसा एक्जीक्यूटिव प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रारम्भ किया गया हैं जिसमें सी0ई0ओ0 और बिजनेस लीडर्स को कालिदास की रचनाओं, सम्राट अशोक की शिक्षाओं, भगवद्गीता आदि कौटिल्य के अर्शशास्त्र की बारिकियों को

समझाया जा रहा है। प्रबन्धन से जुड़े लोगों को भारतीय संस्कृति और मानव मूल्यों के माध्यम से कार्य को दक्षतापूर्ण बनाने का पाठ पढ़ाया जा रहा है। आई0आई0एम0 कोजी कोड में लीडरशिप क्लिनिक नाम की कार्यशाला का आयोजन किया जाता है इसमें वरिष्ठ प्रबन्धकों को दिमाग की ऊर्जा का सही तरह से प्रयोग करने का सबक सिखाते समय नैतिक मूल्यों पर भी जोर दिया जाता है।

निष्कर्षतः शैक्षिक अनुसन्धानों की प्रभावशीलता और गुणवत्ता उन्हें सही रूप से क्रियान्वित करने पर निर्भर करती है।

सन्दर्भ–सूचीः–

1. कोठारी गुलाब, प्रधान सम्पादक, राजस्थान पत्रिका 12 अक्टूबर 2012 'आचार्य महाप्रज्ञ की स्मृति में द्वितीय व्याख्यान माला के अवसर पर' उदयपुर
2. रायजादा, बी0एस0वर्मा, वन्दना शिक्षा में अनुसन्धान के आवश्यक तत्व, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर तृतीय संस्करण–2011
3. राजस्थान पत्रिका 11 अक्टूबर 2012
4. भटनागर, आर0पी0एम0, भटनागर 'शिक्षा–अनुसन्धान' लायल बुक डिपो, मेरठ द्वितीय संस्करण 2003
5. सिंह, ए0के0 'मनोविज्ञान , समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ, मोतीलाल बनारसी दास पुनमुद्रण–2008